an>

Title: Need to desilt rivers Sharda and Suheli in Lakhimpur Kheri in order to check floods.

श्री अजय मिश्रा टेनी (खीरी) : माननीय अध्यक्ष जी, भारत-नेपाल सीमा पर स्थित लखीमपुर-खीरी का कुछ तराई का क्षेत्र निघासन और पलिया तहसील में ऐसा है, जहां पर पहले आबादी नहीं थी। उक्त क्षेत्र के विकास के लिए पूर्व में सरकार ने 25 कालोनीज वहां बसाई थी। जिस कारण उस क्षेत्र का विकास हुआ। परंतु 2001 में नेपाल राज्य में नई परियोजनाएं बनीं, जिससे वहां की नदियों का प्राकृतिक रुख मोड़कर शारदा नदी में भारत में टाटरगंज में और सुहैली नदी में घोल में तथा निघासन तहसील में कर्नाली नदी में बनवीरपुर गंगापुर के पास नेपाली नदियों का पानी उनमें डाल दिया गया। इस कारण पूरे क्षेत्र में आठ-दस सालों से बाढ़ के कारण तबाही मची हुई है। प्रदेश में मात्र एक राष्ट्रीय उद्यान दुधवा है, जिसमें गत वर्षों से आ रही बाढ़ के साथ गाद भर जाने से सैंकड़ों एकड़ जमीन में खड़े लकड़ी के वृक्ष भी सूख गए हैं और बाड़ से वन्य प्राणी भी मर रहे हैं। सुहैली नदी से सिंचाई कम व पानी के निकास का उचित प्रबंध न होने के कारण क्षेत्र में बाढ़ का प्रकोप अधिक होता है। कई जगह सुहैली नदी के तटबंध भी टूटे हैं। करनाली नदी भी बहुत बुरी तरह से कटाव कर रही है जिससे बाढ़ की विभीषिका का प्रकोप पूरे क्षेत्र में है। क्षेत्र में प्रमुख रूप से गन्ने व धान की खेती होती है। विगत् कई वर्षों से हजारों एकड़ भूमि पर उपज बाढ़ के कारण बर्बाद हो रही है। इस क्षेत्र में चार चीनी मिलें हैं, परन्तु किसान अच्छी कृषि भूमि होने के बावजूद बाढ़ के कारण खतरे में पड़ गये हैं और उनकी आर्थिक व्यवस्था खराब हो गयी है। बाढ़ से बचाने के लिए शारदा एवं सुहैली के तटबंध बनाने तथा करनाली में जहां कटाव हो रहा है वहां पर भी तटबंधों के निर्माण करने की आवश्यकता है। केन्द्र सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने कई बार वहां पर धन-आबंटन भी किया है लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं हुआ। अतः मेरा आपके माध्यम से भारत सरकार से अनुरोध है कि सुहैली नदी व शारदा नदी की गहराई, सिल्ट की सफाई करके बढ़ाई जाए तथा टूटे हुए तटबंधों को बांधने तथा करनाली नदी जहां-जहां पर कटाव कर रही है तटबंध बनाने और प्राकृतिक बहाव के नाले जिन्हें भगार कहा जाता है, उनकी सफाई भी कराई जाए, जिससे बाढ़ की विभीषिका से क्षेत्र को बचाने का काम हो सके और किसानों की उपज बच सके।